आनन्द वचनामृतम् / Ánanda Vacanámrtam

विशुद्ध / Pure ♦ Parts 1 & 2 / भाग १ - २

श्री श्री आनन्दमूर्ति / Shrii Shrii Ánandamúrti

"विद्या का घमण्ड रहने से लोग अपने speciality की तरफ़ अधिक ध्यान देते हैं, सत्य निर्धारण की तरफ़ अधिक ध्यान नहीं देते हैं । अधिक ध्यान देते हैं just to maintain their own speciality. 'अहङ्कार' इसी को कहते हैं । और यह विद्या जहाँ है, जहाँ भक्ति नहीं है (devotion नहीं है, knowledge है), वहाँ यही होता है । ... सत्य निर्धारण का प्रयास जितना रहता है, उससे अधिक प्रयास रहता है अपनी विशेषता को प्रतिष्ठित करने का । इससे होता है क्या ? ये [भक्ति विहीन विद्वान] लोग आख़िर तक दुनिया के बोझा बन जाते हैं । ये जब मरते हैं, लोग बोलता है 'ठीक है, आफ़त गया ।'" *२१ अगस्त १९७८, सायङ्कालिन, पटना (प्रथम बार प्रकाशित)*

"Where there is knowledge but no *bhakti,* then those people try to establish their specialities. And, this endeavour to establish the speciality becomes more important than to find out the truth, than to find out the veracity. …Are they assets or liabilities for human civilization? …Liabilities." *21 August 1978, evening, Patna (First time printed)*

"तुम हो सकते हो बड़े विद्वान हो, हो सकते हो मूर्ख हो; हो सकता है धनिक हो, हो सकता है ग़रीब हो; हो सकता है तुम बृहत् हाथी हो, हो सकता है तुम छोटी-सी चींटी हो—उनके लिए सब समान है । स्थूल शरीर किसका कितना बड़ा, और किसका छोटा, उस तरफ़ उनका ध्यान नहीं है । उनका ध्यान है तुम्हारे आत्मा की ओर ।" *२९ सितम्बर १९७८, प्रातःकालीन, पटना*

"This type of knowledge concerned with crude materialism has done much harm to human society during the last one century. It misguided much, the entire human society. It has converted human beings into animals. And animals have been exploited by the propounders of those crude philosophies." *13 September 1978, GD, Patna*

"एक ही कर्म है, साधना । दुनिया में और जितने कर्म मनुष्य करते हैं, वह साधना का part है, वह साधनाङ्ग है । साधना ही एकमात्र कर्म है, जिस कर्म के कारण आत्मज्ञान में प्रतिष्ठा होगी ।"
सु.सं.२६, मूल हिन्दी प्रवचन, १८ जून १९६९, धर्ममहाचक्र, लखनऊ

~~ परमपिता बाबा की जय ~~